मालिकों ने उन्हें अच्छे से सजाया हुआ था। फुदना, रिब्बन एवं रंगीन रस्सियों से उनका श्रृंगार किया गया था। पर सुल्तान का कद वहाँ सबका ध्यान खींच रहा था। सुल्तान जब गर्दन उठाकर खड़ा होता तो अच्छे खासे जवान आदमी की छाती तक पहुँच जाता था। पहले दिन से ही सुल्तान की चर्चा पूरी बकरा मंडी में होने लगी। वहाँ आने वाले सारे खरीदार एक बार आकर सुल्तान को जरूर देख जाते।

लक्ष्मण महतो को एक तो घर वापसी की जल्दी थी और दूसरे इस डर से कि कहीं वह पकड़ा नहीं जाये एवं उसकी झूठ की पोल न खुल जाये इसलिए उसने जो पहला ग्राहक मिला उसी को अपने बकरे को बेचकर वापस हो लिया।

थोड़ी देर के बाद जब जुम्मन पत्तियां लेकर लौटा तो उसने पाया कि सुल्तान वहाँ नहीं है। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई पर सुल्तान का कहीं नामोनिशान नहीं था। इतना बड़ा बकरा कहाँ चला गया। उसका दिल धक से बैठ गया। उसने देखा बाड़े में अल्लाउद्दीन भाई भी नहीं है। हैरान परेशान जुम्मन पागलों की भाँति इधर उधर सुल्तान को ढूँढने लगा। अल्लाउद्दीन भाई उसे सामने के बाड़े में दिख गए।

बकरीद आने में अभी एक सप्ताह का वक्त था। सुल्तान की कीमत बाजार में 50 हजार रुपये लगायी गयी। पर जुम्मन जानता था कि जैसे-जैसे बकरीद का दिन करीब आएगा, ज्यादा दाम मिलेगा। आखिर वह बकरा नहीं हीरा बेचने आया है। एक दो ग्राहक ने पचपन हजार तक का ऑफर दिया पर जुम्मन सत्तर हजार से कम नहीं लेने पर अड़े हुआ था।

एक बात और थी जिसके कारण जुम्मन सुल्तान को बेचने में देरी कर रहा था। जुम्मन को लगता था कि इस तरह से वह कुछ और दिन सुल्तान को अपनी आँखों के सामने देख सकता है। आखिरकार सुल्तान को दूसरे के पास तो चले ही जाना है। वह खरीद कर घास व पत्तियां लाता, अपने हाथों से खूब मन से सुल्तान को खिलाता। बाड़े का मालिक उसकी इस जिद से परेशान था। बाजार अपने शबाब पर था। बाड़े में जगह सीमित थी। एक बकरा जाएगा तो दूसरा बकरा बाड़े में घुसेगा। जितने ज्यादा बकरे बिकेंगे उतना ही ज्यादा कमीशन मिलेगा। बाड़े का मालिक चाहता था कि जुम्मन जल्दी से अपना बकरा बेचकर जाये और जगह खाली करे, लेकिन वह उसका पुराना परिचित व दोस्त था इसलिए खुलकर कुछ कह नहीं पा रहा था। जुम्मन पहले भी इस मंडी में आकर बकरे बेचता रहा है। पर वह हमेशा जल्दी में रहता था एवं जिस दिन आता था उसी दिन उन्नीस बीस करके माल समेट कर घर वापस चला जाता था।

दिन एक-एक करके बीतता गया। आखिरकार बकरीद में सिर्फ दो दिन बचे रह गए। अब तो सुल्तान को हटाना ही होगा। एक दिन के बाद मैदान खाली करा दिया जाएगा। बाड़े समेट लिए जायेंगे। माहौल में त्योहार की खुशबू जोरों से तारी होने लगी थी। जुम्मन का दिल डूबने लगा था। इसी बीच सुल्तान के कद काठी की चर्चा पूरे शहर में हो गयी थी। बाजार में आज सुबह से ही भीड़ बढ़ गयी थी। जिन्होंने अभी तक कुरबानी के लिए बकरे की खरीद नहीं की थी वे जल्दी से अब अपनी खरीदारी करके दूसरे काम निबटाना चाहते थे। मैदान के आसपास मेले वाले भी अब अपने तम्बू कनात डालने लगे थे। चारों तरफ खूब गहमा गहमी थी।

जुम्मन रात भर सो नहीं पाया था। तराजू के एक पलड़े में बीमार बीवी, बेटी रुकैया के आँसू, पोते पोतियों के लिए किताबें और ड्रेस की जरूरत, खुद के लिए एक अदद कुर्ता-पायजामा और दूसरे पलड़े में सुल्तान और बीच में तराजू को पकड़े जुम्मन के काँपते हाथ। एक बेजुबान जानवर के आगे परिवार वालों की जरूरतें भारी पड़ रही थी। एक निरीह जानवर के कंधे पर कितनी आकांक्षाओं का बोझ था। इसी असमंजस में जुम्मन रात भर जागता रहा था।

दोपहर का वक्त आ गया था। आज सुल्तान की बोली साठ हजार तक पहुँच गयी थी। मिलने वाले दाम के लिए जुम्मन खुश भी था और सुल्तान की जुदाई को लेकर दुखी भी। जुम्मन ने सुबह से कुछ नहीं खाया था। उसने सोचा कि झटपट जाकर कुछ खा आया जाये। सुल्तान के लिए भी उसने सोचा कि कुछ ताजा पत्तियां व घास ले आए। थोड़ी ही दूर पर सिराज मुस्लिम होटल था। कई सालों से जुम्मन जब भी वहाँ आता था तो वहीं खाता था। खाना खाकर वह घास व पातियाँ लाने चला गया। आसपास कहीं पत्तियां नहीं मिली तो उसे दूर जाना पड़ गया। वह सुल्तान को भूखे पेट कैसे विदा कर सकता था। उसे भर पेट खिलाकर ही विदा करेगा।

थोड़ी देर के बाद जब जुम्मन पत्तियां लेकर लौटा तो उसने पाया कि सुल्तान वहाँ नहीं है। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई पर सुल्तान का कहीं नामोनिशान नहीं था। इतना बड़ा बकरा कहाँ चला गया। उसका दिल धक से बैठ गया। उसने देखा बाड़े में अल्लाउद्दीन भाई भी नहीं है। हैरान परेशान जुम्मन पागलों की भाँति इधर उधर सुल्तान को ढूँढने लगा। अल्लाउद्दीन भाई उसे सामने के बाड़े में दिख गए। उसने उससे सुल्तान के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह तो बस थोड़ी देर के लिए पान खाने के लिए निकला था और अब वापस लौट रहा था। काफी खोजबीन के बाबजूद सुल्तान का कहीं पता नहीं